अन्हरियाक चान

गजल संग्रह

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'

जन्म : २००८ साल, साउन, बधचौड़ा, जि. धनुषा

शिक्षा : एम.ए. (त्रि.वि.वि.) पी-एच.डी. (मानद)

सम्प्रति : सदस्यः प्राज्ञ परिषद्, नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, कमलादी

प्रकाशित कृति

काव्य : बन्न कोठरी औनाइत धुआँ (कवितासंग्रह) : २०२९ साल, नहि, आब नहि (दीर्घकविता) २०३६ साल, मोमक पघलैत अधर (गीत, गजल), अप्पन अनचिन्हार (कवितासंग्रह) : १९९० ई. भयो अब भयो (अनुवाद) बस अब नही (हिन्दी अनुवाद)।

कथासंग्रह : तोरासंगे जएबौ रे कुजवा (कथासंग्रह) १९८४ ई., हुगली ऊपर बहैत गंगा (कथासंग्रह) २०६५

उपन्यास : घरमुहाँ (उपन्यास) २०६८, घरमुहाँ (भोजपुरी संस्करण (२०६९)।

नाटक : रानी चन्द्रवती : २०४५ साल, एकटा आओर वसन्तः २०५२ साल, महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक : २०५४ साल, भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरु (नेपाली अनुवाद) २०६४ भैया अएलै अपन सोराज (नाटक) २०६७, एकटा आओर वसन्त एवं अन्य नाटक (नाटक संग्रह), साझा प्रकाशन, २०६८।

शोध : जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरुः २०५६, राजकमलक कथासाहित्यमे नारी : २०६४ साल, लोकनाट्य : जट-जटिन : २०६४ : Cultural Heritage of Janakpur : २०६२साल। मैथिली लोकसंस्कृति (आलेख-संग्रह) २०६६। तराईको फॉट देखि हिमालको कांख सम्म (आलेख संग्रह), प्रकाशकः साझा प्रकाशन, २०६७।

विविध : आजको धनुषा : २०३९ साल, जनकपुर लोकचित्रः २०४६ साल। समयको अन्तराल पछ्याउदै (आलेख संग्रह, २०६६ साल) ठेकान पर (विचार संग्रह), समय संदर्भ (विविधात्मक) २०६८।

अन्हरियाक चान

गजल–संग्रह

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'



जनकपुर ललितकला प्रतिष्ठान

अन्हरियाक चान

प्रकाशक : जनकपुर ललितकला प्रतिष्ठान
जनकपुर, धनुषा
फोन नं० ०४१–५२०२६७

विधा : मैथिली गजल

आवरण आ लेआउट : राजू प्रसाद काफ्ले

प्रथम संस्करण : दिसम्बर, 2013 (विवाह पञ्ममी २०७०)

प्रति : ५०१

मूल्य : रू० १००/–

मूद्रण : प्रिंटवेल, टावर चौक, दरभंगा

ISBN No. : 978-9937-2-7360-2

Anhariyak Chaan
(Gajal)

By : Ram Bharos Kapari, 'Bhramar'

अनचिन्हार गजलक संग

हम कहिया गजल लिखऽ लगलहुँ मोन नहि अछि । मुदा, पहिल गजल 'मिथिला मिहिर' मे छपल रहए आ तकरा बाद विभिन्न पत्र-पत्रिकामे निरन्तर । पढ़ी 'गजल' उर्दूक एकटा पहिचान छै जकरा आन भाषा-भाषी पैंच लऽ अपनामे प्रतिष्ठित कएलनि । ई शास्त्रिय विधान आ चिंतन भऽ सकैछ । हमरा एकरा लिखबाक लेल कोनो सुधि नहि रहए । स्वत: स्फूर्त लिखाइत रहल । हम शुरूएमे कहि दी जे हमर गजलकें शास्त्रिय तराजूपर तौलबाक काजो नहि हो जे हमरा नीक लागत । कारण मतला, रदीफ, काफियाक समन्बय जे जतेक भऽ सकल होइ ओ स्वत: आवेगमे आएल शब्दक बन्द सँ संभव भऽ सकल अछि । हम त' गजलक नामपर मात्र किछु शब्दकें तुकान्त रूपें सजौलहु, तकरा सार्थक उपस्थापन कएलहुँ आ जाहिमे हमर मोनक उद्‌वेग मूर्तरूपमे मुखर भऽ सकए ताहि दिश प्रयास कएलहुँ ।

गजलमे शेर पाँच गोट होए कि दश गोट-हमर लेखनक आगाँ ई समस्या नहि छल आने मकताक प्रयोग जाहिमे अपन नाम हम जोड़ी । बहरक व्याकरणमे हम कहियो ने गेलहुँ आने वर्णकेँ गनिकऽ शेरमे बैसएलहँ । लिखैत गेलहुँ जहिया मोनमे किछु उद्‌वेग उठल आ तकरा पन्नामे उझिलैत गेलहुँ ।

हमरा एखनो धरि पता नहि अछि, हम कतेक गजल लिखने छी । साढ़े चारि दशकक साहित्यिक यात्रामे कतेको गजल लिखाएल हएत, छपलैक आ बहुतो विभिन्न डायरी आ कॉपीक पन्नामे कुमारे रहि गेल ।

एहि बीच हमरा मोनमे आएल जे गजल जे काव्य विधामे बेछप रूपें रहैत अछि, तकरा समेटिकऽ एकटा संग्रह निकालि लेल जाए । बस शुरूभऽ गेल तकबाक अभियान । ओना एकटा आर अपन दुर्गुण बताइए दी । हम जखन कोनो वस्तुक निर्णय करैत छी त हमर धैर्य समाप्त भऽ जाइछ । हम ओकरा तत्काल मूर्तरूपमे देख' चाहैत छी । तएँ हथोड़ि-पथोड़ि कऽ जे जतसँ जतेक गजल भेटल ओकरा एहि संग्रहमे राखि देल अछि ।

हमरा जनैत गजलकेँ नीक जकाँ देखबै तँ एतबो गजलमे हमर अतीत, वर्तमान आ भविष्यक किछु संकेत तँ भेटबे करत आ जँ एहन कोनो प्रसंग मोन-मस्तिष्क पर नहि दौड़ए तँ बूझब हमर गजलमे ओ ताकते नहि अछि। हम सन्तोष कऽ लेब ।

सांच बात ई अछि- आइधरि हम जे जतेक रचना लिखलहु ओ स्वान्त: सुखाय रहल अछि । निजी भावनाक सार्वजनीन अभिव्यक्तिक प्रयास रहल अछि । ओ हमर कथा, कविता, नाटक वा उपन्यासमे देखल जा सकैछ । तखन एहनो रचना जँ कोनो सुधी पाठककेँ रचि-बसि सकनि तँ हम अनेरे अपनाकेँ धन्ये बूझब ने !

मैथिलीमे गजल रचनाक सशक्त हस्ताक्षर भऽ आएल कलानन्द भट्टक गजल आइसँ पैतीस वर्ष पहिने हम 'अर्चना' मे छपने रही । गजलक प्रति रूझान तँ छलहे । तकरा बाद सम्भवत: डा० तारानन्द वियोगी एकटा परिचर्चा 'मिहिर'मे रखलनि जाहिमे हमरो शामिल कएने छलाह । नेपालीय मैथिली साहित्यक डा० धीरेन्द्रीय पाठशालाक चटियामे दू गोटे गजल दिश बढ़ैत गेलहुँ- डा0 राजेन्द्र प्र० 'विमल' आ भ्रमर । डा. विमलक गजल संग्रह आबि गेल अछि, आब हमरो छोटछीन आबिए रहल अछि । ओना एकटा आर सशक्त गजलकार अभरलाह रोशन जनकपुरी । विषय-परिवेशक सीमा होइतो हुनक गजल मोनकेँ छुबैत छैक । हुनको संग्रह जल्दिए आबए से मैथिली संसार चाहैत अछि ।

हमरा अपन पुस्तकक सूचीमे एकटा आर नाम छथि कोनो प्रसन्नता आब नहि होइत अछि । जे अछि तकरे सम्हारब कठिन-घर आ बाहर दुनू दिश । तएँ

आयासे हम प्रकाशन दिश नहि जाइत छी । पता नहि गजलक अमल कोना एहि बीच जागल आ हम एकर फेरमे पड़ि गेल छी । मैथिली पुस्तक ओहुना कीनिकऽ नहि पढ़निहार पाठकक माथ पर ई बिनु आंटीक बोझ लादब सरासर अन्याय थिका ई हम बूझैत छी, मुदा हाय रे बहसल मन । फेर एकटा किताब ।

चलू 'गजल' संग्रह "अन्हरियाक चान" अहाँ सभक आगाँ प्रस्तुत अछि । एहि गजल-संग्रह मादे मैथिली काव्य धाराक पुरोधा व्यक्तित्व सोमदेवजी किछु स्नेह पंक्ति उपलब्ध करौलनि अछि, हम पूर्वोसँ हुनक ऋणी छीयनि, एहि बेर सेहो ।

भाइ, चन्द्रेशकेँ धन्यवाद देनाइयो हमरा लेल मुश्किल, ओ निरन्तर हमरा संगे बनल रहैत छथि, सहयोगमे दुनू हाथ पसारने रहैत छथि । एक बेरक छैक जे धन्यवाद, स्थायी रूपेँ आभार हुनका प्रति ।

गजल केहन रहल, अवश्य लिखी ।

विद्यापति स्मृति पर्व — रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'
2060/2013

अन्हरियाक चान

1

ई जनक केर नगरी अपन गाम थिक
ई मिथिला, बैदेहीक अपन गाम थिक।

माटि अइ धरतीके लगा अपन माथसं
मोक्ष भेटए से इच्छित अपन गाम अछि।

एकरा सीमा ने बन्हलक कानो सीमानसं
सभ मैथिलकेर उपवन अपन गाम थिक।

लोक बैसओ ग कतहु दूर देशमे मुदा
रहए ठोरे पर बैसल अपन गाम थिक।

जाहि धरतीकेर कोरामे सीता पलए
अन्नपूर्णा हँसथि से अपन गाम थिक।

जत्त जन्मे सफल अछि भेनहि भ्रमर
हाथ जोडि क नमन ई अपन गाम थिक ।।



2

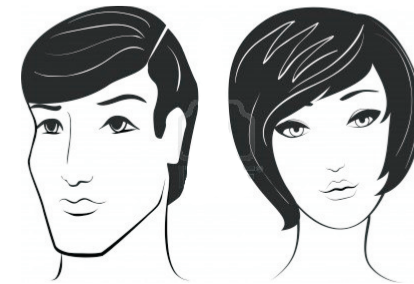
हृदयमे प्रेमकेर पहाड़ लेने ठाढ छी
सबके जूडबैबला संसार लेने ठाढ छी

बहकि जाइ अहाँ ई समस्या अहाँ केर
हम तँ ओरहिसँ सिनेहक पथार नेने ठाढ छी ।

जिनगीक सत्य बड तीत होइछ मीत
रसगुल्लामे बोरल विचार लेने ठाढ छी ।

अबियौ ने छातीमे ठाम बड़ बाँकी छै
स्वागतमे रागक सचार लेने ठाढ़ छी ।

मुँहक फुलझडी किए कठघरामे बन्न भेलै
पोर-पोर मुस्कीक बजार लेने ठाढ छी ।।



समय अछैते बात समझलिऐ ने हम
गदह पचिसियोमे किछु गमलिऐ ने हम

राग रंगक बथानमे एक मुस्कीक खातिर
अनेरे भरमलिऐ, पतिअइलिऐ ने हम ।

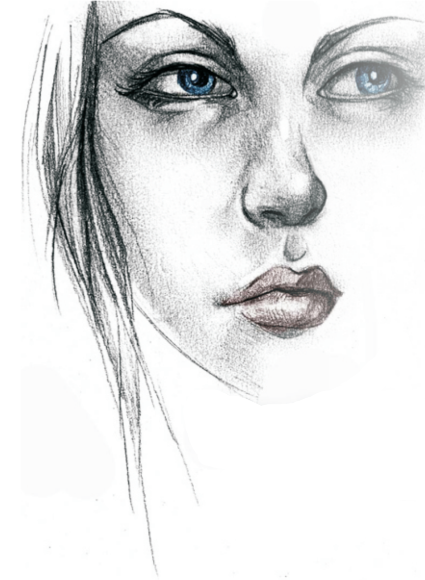
प्रकृतिक दोष कोन, अवसर छल देने
अमानुष बनि मर्म गहलिऐ ने हम ।

प्रेम करबाले साहस जरूरी छै, बन्धु
निवाहबाले कोनो आंट कैलिऐ ने हम ।

बितल समय केर पीडा सहेजने रही
वर्तमानोकेँ साफल जनलिऐ ने हम ।

डरपोक बनि जिनगीकेँ करैत रहल खण्डित
उड़ि गेने चिड़ैक ब्यथा बुझलिऐ ने हम ।।





किए देखु अहाँकेँ की खास अछि प्रिय
इजोतमे आँखि चोन्हिआए की खास अछि प्रिय

अनेरे मोनकेँ तानि सकय अपना दिश
कत्त भेटत एहन दिलवर की खास अछि प्रिय ।

भरिसक आँखि नुकएबाक जी चाहए
अपलक देखैत रही की खास अछि प्रिय ।

देखने छी हमहुँ दुनिञा केर हम - बेहाल
देखिते मोन दुलकि जाय, ई खास अछि प्रिय ।

आब तँ अपनोकेँ ऐनामे चिन्हब कठिन भेल
आनपर नजरि टिकए की खास अछि प्रिय ।

5

जहर पिवैए लोक सेहन्तासँ पक्के नहि
खाधिमे खसैए लोक सेहन्तासँ पक्के नहि

जोगा कऽ राखब जीवन ककरो सम्पति नहि बुझि
लुटएबा लेल अपस्याँत लोक सेहन्तासँ पक्के नहि ।

के केहन देलक पीडा नहि बुझने मर्मक बात
बरोबरि खण्डित होइछ लोक सेहन्तासँ पक्के नहि ।

जीवनक मूल्यकी थिकै कोनो ठेकान कएनहि
जिविते मरैत अछि लोक सेहन्तासँ पक्के नहि ।

अपने पीडामे डुबलकेँ लाख समझाउ तैयो
निराश भऽ पछरैत लोक सेहन्तासँ पक्के नहि ।



6

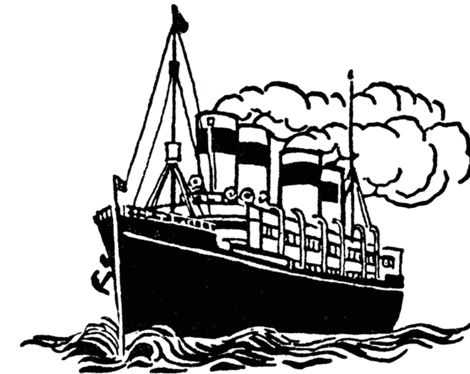
आबि एहि शहरमे जिनगी खोजै छी हम
अन्हरियाक एहि पहरमे इजोरिया खोजै छी हम

किन्हेरसँ बिछोहक दुख त मारिते छल
ज्वार उठल एहि लहरमे नैया खोजै छी हम ।

ओझराएल छी आह भुलभुलैआमे हरपल
अनभुआर एहि डगरमे संगी खोजै छी हम ।

सुनत के ककरा हम बजाउ एत्त एखन
लौटैत एहि पहरमे भोरहरिया खोजै छी हम ।

किछुलोक जे अपनाकेँ कहैए हमर अप्पन
मुखौटाक एहि नगरमे मुस्की खोजै छी हम ।।





मोन मारू कतेक बोल फुटैए नहि
लागल सुरता ओम्हर जे छुटैए नहि

कहबाले उद्बेग हिलोर मारय सदिखन
ठोढपर जँ अबितो हिम्मत जुटैए नहि ।

अहाँ आगाँ मे छी तन्तु जुड़ल रहैए
आ ! परोछो भेने ई क्रम टुटैए नहि ।

कहियाधरि छातीपर ताण्डव मचेबै
बस करू बाजु किछु फुरैए नहि ।

निर्मोहीक चुप्पी जेना कारी अन्हरिया
बितल क्षण जिनगी केर घुरैए नहि ।।

बदहबासे दौगल देखि गुम्म भेली मीरा
भजने विभोर भऽ अराध्य भेला अधीरा

पलपल कटैत जेना वर्षक मियाद बनल
निष्ठुरी निर्मोहीकेर ने अछि कोनो सीरा

घुरि अएलहुँ दरबज्जा सँ बैरंगे मुदा
ई कहबै ककरा जे बुझत ग ई पीडा ।

रत्नक व्यापारी सँ भरल ई दुनियाँ किदहु
कोइलाक भाओमे एत्त बिकाइत अछि हीरा ।।

मानब तँ मानू सत्य होइछ सत्ये 'भ्रमर'
खाई सौंसे रभसि पेनी तीत होइछ खीरा ।





गजल गायिकी थिक तरंग जिनगी केर
भाव भनिता थिक तरंग जिनगी केर

उद्‌गारे पर टिकल धून तालक सरगम
शब्द व्याख्या थिक तरंग जिनगी केर ।

मौन बैसल हो वा उमंग उड़ैत दूर धरि
तकरे उच्छवास थिक तरंग जिन्दगी केर ।

नरम गरम केर खेल चलैत रहत सदिखन
पचएबाक सामर्थ्य थिक तरंग जिनगी केर

लोकक अनुहार पर साटल मुखौटा देखि
भ्रमक व्यापार थिक तरंग जिनगी केर ।।

बात बुझितो अहाँ अनठेलिऐ कोना
ज्वार प्रेमक भितरमे सैंतलिऐ कोना

समुद्रक ढाहीमे उबजुब करैत मोन
बोझ असगरिए छातिपर उघलिऐ कोना ।

संग देबाक बचन तँ हम देनहि छलहुँ
छोडि हमरो निसोहे नोर बहेलिऐ कोना ।

सहबाक एकटा सीमा होइछ प्रिय
अहाँ सब बन्धन सीमाकेँ तोड़लिऐ कोना ।

अहीँपर टिकल जे तार रहए बाँकी 'भ्रमर''
जीद्‌दे निष्ठुर भऽ तोड़लिऐ कोना ।।



कतबो तंगेरू मुदा बैसि गेल पाट ओ
एखन चोन्हरायल छी लगा गेल चाट ओ ।

गर्मिक भोर सन अलसायल नेत जकर
देखत जँ अबैत तँ काटि लेत बाट ओ ।

बढैत ब्याजक ब्यथासन पाछु कचोटत जे
हमर सुखभोग केर बनल अछि काट ओ ।

विश्वासे थिक जीवन, करू नहि तँ जायब कत्त
सहभागी मीत आइ बदलि लेल, घाट ओ ।

गछ पक्कू आम जकाँ टभकै सिनेह जकर,
जोड़ल ने जा सकय, एहन बनल फाट ओ ।





आवाजहुँ ने भेटलहुँ मीत ई नहि चाही,
उठौने टुटल प्रणय भार मीत, ई नहि चाही ।

विश्वासक ई धोखा चरित्रसँ जोड़ा जाइछ
चरित्रहीन कहु कोना मीत, ई नहि चाही ।

चुपचाप सब छोड़ि अनचिन्हार गाममे बसि गेलहुं,
प्रतिक्षित अछि रूकल, मीत, ई नहि चाही ।

राति दिन संग रहब, बरोबरि अहाँ कहने रही
एखन एसगर छी अवाक, मीत, ई नहि चाही ।

बाप माय हरदम नहि, ईमान रहैछ संगमे
इमान्दारीमे बट्टा लागल, मीत ई नहि चाही ।

जीवाक कल्पना धरि जकरा लेल अशोकर्य रहए
एना जीवन संग खेललहुं मीत ई नहि चाही ।

बसा लेलहुँ घर अहाँ मुदा सोचलहुं ने कनेको
जीएब हम कोना मीत ई नहि चाही ।।



रागक अनुराग देखि चिहुँकैए कातरमन ।
फाटल गुदरीकेँ सीबैए कातर-मन ।
छूटि चुकल डोरी, जे सिनेहक छल कहियो
आनक आननमे ताकैए कातर-मन ।।
वर्षाक बुन्न खसै छातीपर बज्र-सन,
मर्माहत चितकेँ पड़तारैए कातर-मन ।
झपसीक एकांतीमे बेर-बेर मोन पाड़य,
बालूक भीत जकाँ भहरैए कातर-मन ।
ने कोनो चिट्ठी, ने पठबै समाद ओ,
आशामे बाटकेँ निहारैए कातर-मन ।
छोड़ू जँ तोड़ि गेल रागकेर ताग ओ,
मानितो ने मानैए थेथर ई कातर मन ।।

जोड़य सम्बन्धक नव सूत्र हमर अप्पन ।
मनुक्खक एहि हेँजमे फूट हमर अप्पन ।
चन्नाक आगु-पाछु तरेगनक हेँजसन
हमरे ले' बेहाल एकजुट हमर अप्पन ।
पयबा ले' लक्ष्य आश मुट्ठीमे हरदम
पहाड़जकाँ ठाढ़ निराश करय हमर अप्पन ।
हम चली जतऽ जाहि बाटपर नित दिन
काँटक इत्र छीटय हमर अप्पन ।
हँसिकऽ जे सदिखन गुण गावय हमरा लग
परोक्षमे सदैव व्यूह रचय हमर अप्पन ।
प्रेमक भूख मोन छुच्छा बनौलक 'भ्रमर'
फूल, बैसबासँ पूर्वे, तोड़य हमर अप्पन ।
दर्शन एहि जिनगीक बूझब थिक टुटब
पड़ल गर्द चिंतनपर झाड़य हमर अप्पन ।
नोचायल काया शेष हड्डीए अधार अछि
जेहो छै बांचल ने छोड़य हमर अप्पन ।





सुतल अतीतकेँ पुनि जगायब हम
भोतिआयल बटोही ठाम प' लायब हम

जँ बाटक अन्हरिया धोखा देअय
चान-सुरूजकेर बाती जरायब हम

मानल गलती छल हमर बूझल नहि मीत
मौका पबिते भरि पोख बुझायब हम

साँस उठै आ खसै अछि अहँक नामसँ
कहू छिड़िआयल सिनेह कोना सजायब हम?

चूक सभसँ होइछ बात सभ केओ बुझैछ
दण्ड भोगबाक भार धरि उठायब हम ।

पाबी ने हम इजोरिया तँ कारी छीनत के हमर
लोके बनओ अधिकारी बोनिहारी छीनत के हमर ।

छीनल कित्ताक भर पर रोआबी देखाबओ केओ
उजड़ल जन, सभ धन सरकारी छीनत के हमर ।

गद्दाक हो बैसारी अटारीमे भरमैत रहू अहाँ
सन्तोष अछि जे टुटलहो एकचारी छीनत के हमर ।

सजाओल पञ्चमुखी दीआकेँ जोगयबाक रहत फिकिर
एसकर भीआओन रातिक अन्हारी छीनत के हमर ।

चानीक वासनमे जकरा अरघै ने अन्न कहियो
अलमुनियाँक पचकल-फूटल थारी छीनत के हमर ।

ध्रुव सत्य थिक जे मंजिल पयबे अभिष्ट सदिखन
तँ सहज सुखद एकपेरियाक असबारी छीनत के हमर ।





गुमसैत मोनक दर्द पीबू तँ जानब
छहोछित हृदयकेँ सीबू तँ जानब ।

अमृतकेँ पीबि-पीबि जीयब कोन जिनगी ।
हँसैत घोटि जहरकेँ जीबू तँ जानब ।

छाँह अपनौने संग गाछ ताड़क उतान
घौर केरा जकाँ अहाँ लीबू तँ जानब ।

उज्जर कागज सन मित्रताक दम्भेसँ की
पड़ल प्रेममे कोनो दाग कने नीपू तँ जानब ।

दुनियाँ समुद्र माछ प्रेमक अछि सह-सह
बिन बोरे समर्पणकेर छीपू तँ जानब ।

नुका-नुका 'वार' करब कोन पौरष
साँढ़ जकाँ देखरगरमे भीडू तँ जानब ।





अहाँक छीड़िआयल कादो मध्य माखल छी हम
आन केओ नहि भेटल मात्र ताकल छी हम ।

मानल बाँटल ने जाइछ प्रेम ठहरल कत्तहु
पापी मनकेँ परतारबामे लागल छी हम ।

प्रतिबद्धे रही तँ किए मुस्की बँटलहु
कानि सगरो जीवन बाट धाँगल छी हम ।

जनै छी जीबा लेल रुखगर आवरण थिक जरूरी
पुरान पड़ल पेओन लेल टाँगल छी हम ।

जनै छी प्राप्ति सुखगर मृगतृष्णा रहल
नियतिकेर चाबुकसँ हाँकल छी हम ।

उड़ओ जे उड़त अकासेमे हरदम
धरतीकेर आँचरमे टाँकल छी हम ।

दरिद्रे बनल छी तँ केओ लूटत ने आब
थकुचायल हियाकेँ आर कूटत ने आब
छान तोड़िय लेल जे किछु पयबा ले जँ
पुनि पुरने खट्टासँ खूटत ने आब ।
पाबि नहिये सकब बात हमहुं बुझै छी
हथोरबाक हिंसक धरि छूटत ने आब ।
भागि जतयसँ अयलहुं घुरू ओत्त कोना
चनकल स्नेह केर बासन से जूटत ने आब ।
आगाँ खाधिए अबौक आकि बन्हन छेकाउ
पयर पड़ि चूकल आगाँ जे रूकत ने आब ।
स्वाद पल-पल बदलवा ले बहसल जे जीह
काटि फेकियो देबैक तँ चूकत ने आब ।
नहि, रोकू नहि आब, बाँहि पसारू जँ हुअय तँ
बाट एकपेड़िए सही ओ फूटत ने आब ।





मजुरक मरखाह गरीबीकें नाथिकऽ तँ देखू,
अपन भरल बखारी अन्न कने बाँटिकऽ तँ देखू,
जीबाले मरि-मरि कऽ जीअब कोन जिनगी
मरल लोक बीचमे जीबिकऽ तँ देखू ।
बनल पटरीपर हाथ नचओने ने बूझव
टूटल तार सप्तकके जोड़िकऽ तँ देखू ।
बहैए जे कोशी आ कमला, बलान नित
अपना दिश कनेको मोड़िकऽ तँ देखू ।
रूढ़िक श्रापसँ गछरल परम्पराके
भगिरथ भऽ एखनहु तोड़िकऽ तँ देखू ।
देवता बनि पूजा करओलहु से बूझल
मानब भऽ एत्त बाँचिकऽ तँ देखू ।

मृगतृष्णरकेर पाछाँ अटकि-अटकि भटकल मन
दूर कतौ मरूभूमिमे पानि पर अटकल मन
तरासकेर संत्रास हम भोगल अछि जीवनभरि
आबहु ई पापी धोअन पर लसकल मन ।
मनबैछी बेर-बेर थोड़-थम्ह करैत-करैत
कीनल सपनाकेँ नै छोड़ैत अछि बहसल मन ।
जाउ, आब पाट बैसू अशोथकित हमहुँ छी
अयना जकां छहोछित भए गेल चहकल मन ।
कतबो धरू धीरज हृदय कहाँ मानैत अछि
गलतियो बेर-बेर दोहरबैत अछि चसकल मन ।



एना नुकबियौ ने हंसी अन्हेर ने करू
एना रोकियौ ने गुलाब अन्हेर ने करू
किछु-किछु के ठोर मात्र हंसबा ले' होइछै'
विजुकबियौने ठोर, अन्हेर ने करू ।
प्रफुल्लित भ' बात जखन करैछी प्रिय
छिड़िअबै' छी मोती अन्हेर ने करू ।
गोट-गोट दाना ले तरसैत ई भावमोन
रौद्र रूप डँसि लैछ अन्हेर ने करू ।
मानल जे ऋणी छी अहँक सद्भाव, प्रेमक
आह, एना क' प्रताड़ब अन्हेर ने करू ।
जँ बांसे ने रहत त बजाएब की बंशी
छोड़ू ई जीद आब अन्हेर ने करू ।
तोड़बासँ सभ दिन जोडब थिक उत्तम
ई बिसरि कोना गेलिऐ, अन्हेर ने करू ।



कत्ता तोहर चोख छौक ई पूर्वेसँ बूझल छल ?
मनमे तोहर चोर छौक ई पूर्वेसँ बूझल छल

नीचताक हदधरि, केओ-केओ पहुँचैत अछि,
तों धरि पार करबेँ ई पूर्वेसँ बूझल छल ।

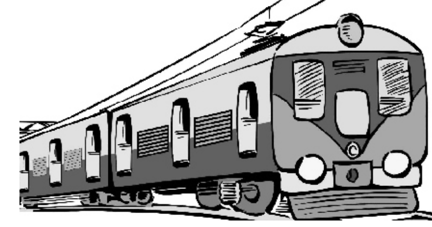
बुत्ता छौक बाँहिमे तँ खसलकँ उठा कनेक
छीटकी मारि खसबैका छै ई पूर्वेसँ बूझल छल ।

लाख तोँ प्रयत्न कर क्षुद्रताक सीमा धरि
मुँह बले खसबेँ तोँ ई पूर्वेसँ बूझल छल ।

कतबो कुचर तोँ अपन अज्ञानता पर
आँखि नै मिला सकबेँ ई पूर्वेसँ बूझल छल ।

बस, बस आब पूर्ण भेलौ उनटा छौ गणना शुरू
झूकब तोहर ध्रुव थिक ई पूर्वेसँ बूझल छल ।।





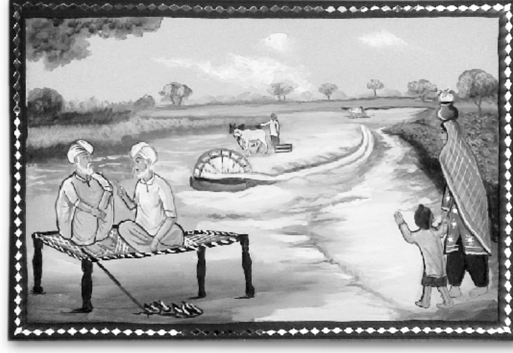
इन्तजारक घड़ी कठिन भेल जा रहल
खूजत कखन रेल कठिन भेल जा रहल

पैसिते विहारमे लकबा जे मारलक एकरा
स्टेशनोपर पहुँचब कठिन भेल जा रहल ।

कुर्लासँ चललापर समय-सीमा साबूत रहए
टुडगंज अबिते ससरब कठिन भेल जा रहल ।

नामसुनै छलहुं विहारक रेल होइछ उत्पीड़क
आबतँ पीडोकेँ सहब कठिन भेल जा रहल ।

गन्तव्य धरि पहुँचबाक ने उपायो अछि दोसर
थाकि-हारि दुखो आब मलिन भेल जा रहल ।



चाहैछी सान्निध्य अहँक, पल-पल जुड़ैत रही
दृश्य अबौक जत्तेक, अहीँटा फुरैत रही
रेलक पटरी संग दौड़ैत अछि स्मृति दंश
सिंगरहारक फूल बनि, बेर-बेर झडैत रही ।
खौंझाहिट पीड़ा बनि, हियाकेँ सालैत अछि ।
कहियो ने गमलिऐ दर्द, उपरे उपर उड़ैत रही ।
गामक प्रसंग जखन मोन पडए कखनो
चारूभर समुद्र बिच धह-धह जरैत रही ।
गिरहकट बनियाँक खाता लिखल रकम जकाँ
पल-पल उबरैत आ पल-पल डुबैत रही ।
सम्बन्धक व्यामोहसँ निकलबाक हमर लाख प्रयत्न
ध्वस्त होइत, चक्रव्यूहमे असुरक्षित हम घुरैत रही ।

चान धरतीपर उतरै आ ठहरि जाइ कतौ
अंग एहन जे देखिते आंखि खहरि जाइ कतौ
लाख चाहलो पर तंद्रा ने भंग भ' सकए
आंखि जूड़िते ज्वार झहरि जाइ कतौ ।
रूप धोखा थिक, छलिआ, मोनकँ हिलोड़ैबला
ज्ञान होइतो ई बतहा मोन लचरि जाइ कतौ ।
बड मनोयोग सँ बनाबी घरौंदा अपन
मूर्त्त होएबासँ पूर्वे भहरि जाइ कतौ ।
बस आब नहि घूमब मृततृण्णा केर पाछाँ 'भ्रमर'
आगि सुनगैत अछि कोम्हरो, लहरि जाइ कतौ ।।



सुरा भरल सुराही जँ सहज रूपेँ ने पाबि सकी
चानक भरल कटोरीसँ अमृत ने लाबि सकी

मधुशालासँ कड़गर बनल सिनेह अहँक गोरी
पीआउ एना जे पुनः होशमे ने आबि सकी ।

अमृतक कथा कतेको बेर सुनऔने छथि विमलजी
हुसलापर विरह गीत मुदा ने हम गाबि सकी ।

बिनु पीनहुँ जँ बेहोशीक आलम रहय सदिखन
उठैत ज्वार मोनक बस आब हम ने दाबि सकी ।

कएलहुँ जे पएलहुँ बस करु आब
कण्ठ धरि ठेकल अछि किन्हु ने जाबि सकब ।



मीत, बहन्ना बना कात भेलहुँ, मोन मानैत नहि अछि,
लोकक आगाँ अपमान केलहुँ, मोन मानैत नहि अछि,

भेंटला पर कतबो देब सफाई आब अपन करतूतक
जे तीर गेल निकलि, घूरत, से मोन मानैत नहि अछि ।

राजनीति केर खेल तँ अबैत-जाइत रहै छैक बन्धु
मुदा, सम्वेदना एना मरैत छैक मोन मानैत नहि अछि ।।

आन्हर भ' जाइछ जखन स्वार्थक आगाँ ई दुनियाँ
खसि पड़तै निचाँ, से एतेक धरि, मोन मानैत नहि अछि ।

औजी तैयार रहु खिंचबालेल पैघ लकीर आगाँ मे
घटा सकत मीलक पाथरकेँ, मोन मानैत नहि अछि ।





बात बढ़िए जँ गेल त अहाँ सुनि लिअ
हक भेटतै जरूर जे अहाँ सुनि लिअ
राज भेटतै अवस्स ने संशय कनेको
हयत सपना आब पूर्ण से अहाँ सूनि लिअ ।
मात्र कसरि छैक प्राविधिक लेनदेन थोडेक
चहरि पुट्ठापर सकरएतै से अहाँ सुनि लिअ ।
फाँड़ बान्हि कूदल अछि मैथिल जे रणमे
आन्दोलन अछि शीर्ष प' से अहाँ सुनि लिअ ।
कोनो बहाना ने रोकत मिथिला केर आब
लिखाएत नव इतिहास से अहाँ सुनि लिअ ।
ने अइ पार ने ओइ पार टुटत ग' रेखा
रहत मैथिलटा पहिचान से अहाँ सुनि लिअ ।।

नोरक एहि मोतीक किमत ने बुझलिऐ' अहां
अनारी बनियाँ जकाँ घटी कऽ तौललिऐ अहाँ
भदवारीसन झहड़ि अबैछ गालपर ई बरबस
रोकबा ले' स्नेहकेर छतरी कहाँ बढ़ै लिऐ अहाँ ।
ईख होइछ बेजाए सत्य जानल अछि हमहुँ
उठल मोनक उद्वेग कहाँ सैंतलिऐ अहाँ ।
दुनू जानक भितर अछि अनुरागक बेतार तनल
निकालबाले बोल मधुर, कहाँ सधलिऐ अहां ।
चातक जकाँ तड़पैछी प्रेमक बुन्न लेल
निष्ठूर गगन बनल किए भरमैलिऐ अहाँ ।
जीवनपथ कठिन अछि, नीक बेजाए अबिते रहैछ
समुद्र जकाँ हृदय ने किए बनैलिऐ अहाँ ।।



रूसबोके भाषा किछु होइत छै मीत
बौंसबो के भाषा किछु होइत छै मीत

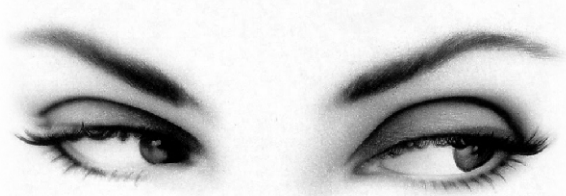
स्नेहक उद्‌बेग जँ नदी बनि बहए तँ
बाढियोक भाषा किछु होइत छै मीत ।

खुजतै ने वाक तँ बुझबामे आओत की
आंखियो के भाषा किछु होइत छै मीत ।

वर्षोसँ छाती मे बसल जे प्रीत कतौ
धकधकियो के भाषा किछु होइत छै मीत ।

राग-प्रेम के नुकौने जे निष्ठुर मन हो
छटपटीयो के भाषा किछु होइत छै मीत

बड़ भेल तोडू ई ओढ़ल मौन आब
प्रतिक्षो के भाषा किछु होइत छै मीत ।





मोकाम जखन तय छै बात कंटके सही
गीद्ध, सियारक हेंज छै बात कंटके सही

चलबाक लूरि केओ सिखाबओ ने हमरा
पाएब लक्ष्य सत्य थिक बात कंटके सही ।

पएबा लेल साथ जकर अकुलाइत रहलौं हम
खुनैत रहल डगहर से, बात कंटके सही ।

एक पेड़ियो प चलबाक आदति छै बन्धु
चलब धरि एसगरियो बात कंटके सही

जँ किछुओ क्षण साथ हमर पुरि सकी मीत
मनमे उल्लास रहत बात कंटके सही ।

बात आब बड़ भेल, काजक ई बेर अछि
समटु गुटबन्दी आब, जोड़क ई बेर अछि
निकलि रहल हाथसँ, भाषाक लगाम जेना
अप्पन आ आनके छुटिअएबाक ने बेर अछि ।
मोनमे जे सैंतल अछि, घरौंदाक सपना
तोड़ि रहल दुष्ट नीति, ई केहन अन्हेर अछि ।
चिनगारीसँ आगिकेर उठान होइछ मीत
सुनगि रहल अहुँमे तेहने सन ढेर अछि ।
संकल्पे अछि जिनगी, संघर्षे अछि प्रतिफल
आबो जँ चुकब तँ, सेर पर सवा सेर अछि ।



मानल अहाँ समुद्र छी भितरे-भितरे किछु नुकौने छी
शांत लहरि बिच अहाँ मृत्युक साज नुकौने छी
अहाँक गहिँराईमे जएबा ले' कएल कोनो प्रयास
की भेल अछि सफल ? ई केहन भाज नुकौने छी ।
अहाँक ठोरपर खेलाइत मुस्की दिआक लौक दैछ भ्रम
सिनेहे जरैत मरैत लोक राग धरि नुकौने छी ।
किए निष्ठुर होइछ समुद्र अविचल, शांत देखितो
मनमे उठैत ज्वार-भाटा कतेक धरि नुकौने छी ।
अपन अनुहार पर अबैत राग-विरागक अछैतो
मरबा धरिक ई चुप्पी बस करू की की नुकौने छी ।
लगैऐ किछु लोक मर' वा मारबा ले' लैत अछि जन्म
प्रायश्चितक बोझ के प्रिय छातीमे किए नुकौने छी ।



बास बैसियो कतौ, एम्हर कि ओम्हर
हृदयकेर डगहर एक्के होएत मीत
प्रेम बढ़िते रहतै ने कोनो संशय एत्त
उत्कर्ष केर मंजिल एक्के होएत मीत ।
दशकों सँ सद्भाव केर गंगा बहैए
घाट एम्हर कि ओम्हर एक्के होएत मीत ।
पानि गंगाक हो कि कमला बलानक
जूड़बैले चित्त दुनू एक्के होएत मीत ।
मोनक भितर मे बांचल हो कोनो विषवृक्ष
काटि फेकबाले' हाथ एक्के होएत मीत ।



छप्पर के दोग द' क' टपकै छे पानि सुतु कोना
हबा बहै सांय-सांय फटक्क हरबड़ाइ छै सुतु कोना
माटि झड़ल टाटसँ झटक्क छै पैसि रहल
बिछौनो छै सिमसिमायल सुतु कोना ।
कतेको बेर माय देखिऐ' बाबूके तंगेरै
अएलै बरिसात आब सुतु कोना ।
तीन-तीन वर्ष बीति गेल, फूसो के छारला
टाटो फरक झहरैछै, सुतु कोना ।
भदबारी मास अएलै बारी-झाड़ी ढ़ाबकूस
कोन घड़ी सांप कीड़ा सुतु कोना ।
हमरो अइबात सँ डर जे सन्हिया गेल
डरे मिलमिलबै छी पपनी, सुतु कोना ।



रानीकेर पोखरिमे ममताक ठाट देखल
श्रद्धा आ भक्तिकेर अद्‌भूत वाट देखल
गामसँ दूर अपना माटिक सुगन्ध लेने
कोसिया, कुरबार आ अर्घ्यसँ भरल घाट देखल ।
कर्तव्यक डोरीसँ बन्हाएल प्रवासी बनल
जनकपुरक बैभवकेँ कतहु ने काट देखल ।
बेर-बेर मोन पड़ैत हाथी भसबैक क्षण
ने कोराक सुगन्ध आने ठकुआक लाट देखल ।
गंगासागरकेर सजल घाट चकमक, आह
बघचौराक अर्घ्यक एत बेर-बेर छांट देखल ।।



सामी विदेश हिया अहुरिया कटैत मन
जड़कला-भदबरिया निछोहे बटैत मन
मारे उद्‌वेग राग-रंगकेर असम्हार भेल
बहसल उचाट तन रभसे रहैत मन ।
फलां बहिनपा सहेज कहाँ सकल तन
उड़ि गेल चिड़ै बनि खोंता तकैत मन ।
लोको व्यवहार होइछ सीमाक बात होइछ
बान्हल उद्‌वेग शांत धधकैत सटैत मन ।
पैसा अबैछ घर खेत धरि जोड़बा धरि
देखि-देखि सुन्न सेज अनेरे फटैत मन ।।



चुप्पे रहबै त हम बूझबै कोना
मनमे रखने छी की बूझबै कोना

भितरे-भितर करेज काटि बैसल छी
आबो ने कहबै त, हम बुझबै कोना ।

सालगस्ती भेने घाव पिजुआ जाइछै
खोंटीके भितर मे की छै बूझबै कोना ।

मानैछी गलती हएत भेल हमरोसँ
दण्ड तोकबै नै त हम बूझबै कोना ।

अहँक स्मरणे हमर साँसक खोराक बनैए
छाती धड़कैए अहुँक ई बुझबै कोना ।।



साथी कठिन अछि निबाहब ई जिनगी
जेना तेना जोड़ि-तोड़ि उगाहब ई जिनगी

विश्वासे जँ टूटि गेल त आहत करेज ल,
कत्त-कत्त रने-बने अबगाहब ई जिनगी ।

हाथक रेखा पर ने करी हम विश्वास कहियो
कर्मक विसातपर अजमायब ई जिनगी ।

कठिन क्षणक यात्राक सहयात्री छलहुँ प्रिय
सोचि-सोचि सएह भरमारएब ई जिनगी ।

मानि लेब नहि छी प्रेमक हकदार भ्रमर
मारि लेब मोन कतेक बौआएब ई जिनगी ।



बाल गजल



मुनियां कनै छै, भूख जोर छै पकड़ने
माय छै निसभेर, भूख जोर छै पकड़ने

उठबैए मम्मीकेँ हाथ पयर फेकि-फेकि
मां मां चिकरैए, भूख जोर छै पकड़ने ।

कखनो हिचुकैए, कखनो अकानैए
आहटे ठुनकैए, भूख जोर छै पकड़ने ।

मम्मी सगबगएली, मुनिया हड़बरेली
दूधक बढलै आस, भूख जोर छै पकड़ने

सुतल माय उठली, मुनिया देखि हंसली
बिहुसैत ठोढ आंचर तर, भूख जोर छै पकड़ने ।।

रुप बनबए बेजान अहींक हाथमे
कोना बचतैक परान अहींक हाथमे

भितरमे गज गज सिनेह भरल हो
रुक्ख छातियोक शान अहींक हाथमे ।

किए मुस्कैलिऐ सगरो बसन्ते-बसन्ते
आएत पतभड़मे जान अहींक हाथमे ।

सिनेहक अकाल मन झड़कै उद्वेगसं
थकित छांहो केर तान अहींक हाथमे ।।



आई एसगर अइ शहर मे अनजान भऽ गेल छी हम
मात्र अहींटा नहि छी किए विरान भऽ गेल छी हम
संग रहिते जे मर्म आइ धरि बूझल ने मीत
सुन्न होइते बिनु लड़ने लहुलहुआन भऽ गेल छी ।
अहंक बक-बक कि नखरा सहैत जे मन अखरए
आइ तकरे लेल किए फिरिशान भऽ गेल छी हम
सान्निधे जे हरदम बसन्तक सुख पबैत रही
किए लगैए पतझड़क बगान भऽ गेल छी हम ।
बफादारी पर अहांक अविश्वास कहां कतौ अछि
आब धुरिआउ सरिपहुँ बेजान भऽ गेल छी हम ।।
जोडब सिनेहके कतौ खेल नहि थिक 'भ्रमर'
गर्म खापडि केर लाबाक धान भऽ गेल छी हम ।
बस, बड़ भेल मोनकें परतारब थिक मुश्किल
लुक झुक भिनसरबाक चान भ गेल छी हम ।



अन्हारियाक चान जकां लुक झुक करैत मन
छिटकल आभाक संग रभसैत उड़ैत मन
चाहियो कऽ पएबाक ने लूरि छी बेसाहल
रने-बने बौआइत थकित पल-पल जरैत मन ।
अनचोके इजोत कतौ आबियो जँ गेल त
अपने मे बेहाल खाधि तन-मन भरैत मन ।
ककरा कहबै दोष लगाबी हम ककरा
स्वयंकेर बाघसं नितदिन लड़ैत मन ।
आबहु जँ मनकें थीर करबै ने 'भ्रमर'
रोकि सकबै कोना कुवाट बाट धरैत मन ।।



सम्पादन : मैथिली पद्यसंग्रह : (नेपाल राजकीय पज्ञाप्रतिष्ठान) : २०५१ साल, लाबाक धान (कवितासंग्रह)२०५१ साल, त्रिशूली (स्व.माथुरद्वारा लिखित खण्डकाव्य) २०४९ साल, नेपालक मैथिली पत्रकारिता : २०४४ साल, मैथिली लोकनृत्य : भावभंगिमा एवं स्वरुप (नेपाल राजकीय प्रज्ञाप्रतिष्ठान) २०६१, अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन आ नेपाल : २०६५ साल, हम और तुम (हिन्दी कवितासंग्रह) : २०६६ साल। मैथिली नाटक संग्रह (नाटक संग्रह) २०६७, विद्यापति आ नेपाल (निबन्ध संग्रह, प्रकाशक : साझा प्रकाशन, ललितपुर) २०६८, लोक नायक सलहेस प्रथम खण्ड एवं द्वितीय खण्ड (नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान) २०६९-२०७० ।

सम्मान : नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान द्वारा प्रथम 'मायादेवी पुरस्कार' द्वारा सम्मानित : २०५२ साल, विद्यापति सेवा संस्थान, दरभङ्गा द्वारा 'मिथिला विभूति' सम्मान, शेखर प्रकाशन, पटना द्वारा 'शेखर सम्मान', ने. मैथिली साहित्य परिषद्, जनकपुर द्वारा 'वैदेही पुरस्कार', अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन मुम्बई द्वारा 'मिथिलारत्न' सम्मान, मधुरिमा नेपाल द्वारा 'मधुरिमा सम्मान', चेतना समिति, पटना द्वारा यात्री चेतना पुरस्कार, साझा प्रकाशन द्वारा साझा लोक संस्कृति पुरस्कार (२०६७), विद्यापति कोष द्वारा नेपाल विद्यापति मैथिली भाषा साहित्य पुरस्कार (२०६८/६९) आदि दर्जनो सम्मान, पुरस्कार प्राप्त ।

विशेष : पूर्व अध्यक्ष : साझा प्रकाशन, ललितपुर

सम्पर्क : १/५५५, सरस्वती सदन, जनकपुर, फो. नं. ०४१-५२०२६७, ९८५४०२०८८९

हाल : मैतीदेवी, काठमाण्डू, फो. नं. ०१-४४४४९६८, मो. ९८४११६४७७०

इमेल : rbkapari@hotmail.com



राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'

(1)

राम भरोस कापड़ि भ्रमर, जनकपुरक सरताज ।
लखि प्रसन्न छथि जानकी, मैथिलीक आवाज ।।
मैथिलीक आवाज, नेपाली संगे चलथि ।
हर्षित लखि धीरेन्द्र, पिता गगन हर्षित रहथि ।।

सुनु विनोद कह सोम, सभ मैथिल वैदेह छथि ।
पुनर्जन्म नहि लेथु, जीविते जे अगेह छथि ।।

(2)

जनकपुरी सीतामयी, दुनू ठाम विदेह ।
तेँ हिमालयाञ्चल बुझू, भव विमुक्त शिव गेह ।।
भव विमुक्त शिव गेह, नयपालक शुभ आचारण ।
कविता रचि अमरत्व, विद्यापतिकेर अनुसरन ।।

सुनू विनोद कह सोम, भूगोले आधार थिक ।
भ्रमर लेल की भेल, काव्य-पंथ उद्धार थिक ।।

(3)

गद्य-पद्य नाटक रचथि, सीता राम भरोस ।
मैथिलीक प्रसार हो, अंग्रेजी बेहोस ।।
अंग्रेजी बेहोस, नेपाली संगे चलथि ।
राजनीतिकेर त्यागि, दुनू बहिन संगे रहथि ।।

सुनू विनोद कह सोम, चन्द्रेशक भव भेद कत ।
नयपालक नेपाल, प्रकृति-धाममे भेद कत ।।

सोमदेव
15.11.2013

ISBN 978-9937-2-7360-2

